साप्ताहिक राशिफल

डॉ. एच सी जैन, ज्योतिषाचार्य

मन की दशा ठीक कर लोगे तो अपनी दशा स्वयं ठीक हो जाएगी। - सुधांशु जी महाराज

18 से 24 अक्टूबर 2020 तक

ये भी अपनाएं : घर या कार्यस्थल की स्वच्छता पर विशेष ध्यान रखें। प्रतिदिन घर या प्रतिष्ठान में धूप, अगरबत्ती का उपयोग करें। भविष्य को लेकर योजनाएं सुबह के समय बनाएं। घर या प्रतिष्ठान के मुख्यद्वार पर सिंदूर से स्वास्तिक बनाएं, ऐसा करने से नकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश नहीं होता है। पूजा-पाठ करते समय कर्पूर को जलाएं। इससे सकारात्मक ऊर्जा में वृद्धि होती है। पुरानी वस्तुओं को अपने पास से हटा दें। कम्प्यूटर को उत्तर दिशा की ओर रखें। जहां आप कार्य करते हैं वहां हरे-भरे पौधों के गमले रख सकते हैं। अपने पास में भगवान श्रीगणेश की मूर्ति रखें। अगर आसपास कोई बंद घड़ी या कोई खराब उपकरण हो तो उसे भी हटा दें। ध्यान को अपनी जीवनशैली में शामिल करें। आशातीत लाभ होगा।

मेष

इस सप्ताह के पहले दो दिनों में मेष राशि के जातक उच्च शिक्षा के क्षेत्रों में तेजी से आगे बढ़ते हुए रहेंगे। परिणामतर आपको किसी प्रतियोगी परीक्षा में सफलता की स्थिति रहेगी। हलांकि इस दौरान आपका रुझान देव पूजा की तरफ भी बना हुआ रहेगा। जिससे आप किसी मांगलिक कार्य को पूरा करने में लगे हुए रहेंगे।

कारोबार धंधे में मंदा रहने से सोच समझकर कदम रखें। **स्वास्थ्य** सर्दी का प्रभाव रहेगा। सावधानी जरूरी।

शिक्षा कैरियर के संबंध में मित्रों से सहयोग मिलेगा। **प्रेम** परिवार में प्रेम-प्रसंग का माहौल बना रहेगा।

उपाय बजरंग बाण का पाठ करें

मिथुन

इस सप्ताह के पहले दो दिनों में मिथुन राशि के जातकों को व्यवसायिक जीवन में अच्छी वृद्धि के संकेत रहेंगे। जिससे आप प्रसन्न रहेंगे। आप इस दौरान किसी संस्था के साथ परस्पर सहयोग के समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए तैयार रहेंगे। जिससे आगामी व्यवसायिक खाका खींचने में अच्छी प्रगति की स्थिति रहेगी।

कारोबार व्यापार-धंधा अच्छा चलेगा। निवेश लाभ देगा। **स्वास्थ्य** माता-पिता के स्वास्थ्य का विशेष ख्यान रखें।

शिक्षा नौकरी में सफलता मिलेगी। मित्र सहयोग करेगा। **प्रेम** लिव-इन से दूर रहें। धोखा मिल सकता है।

उपाय गणपति जी को दूर्वा चढ़ाएं

सिंह

इस सप्ताह के शुरू के दो दिनों से ही सिंह राशि के जातक अपने आय के साधनों को और सुधारने में न केवल निजी तौर पर व्यस्त रहेंगे। बल्कि अपने प्रबंधन तंत्र को भी दुरूस्त करने की पूरी कोशिश में रहेंगे। जिससे आपको अच्छा लाभ रहेगा। आप देखेंगे कि इस दौरान आपकी आमदनी लगातार बढ़ रही है।

कारोबार कर के दायरे में आ सकते हैं। सावधानी रखें। **स्वास्थ्य** बारिश में सेहत का ध्यान रखें। पानी पिएं।

शिक्षा कैरियर पर ध्यान दें। सफलता कदम चूमेगी। **प्रेम** शादी पक्की होगी। परिजन को खुशी मिलेगी।

उपाय ऊँ शं शनिश्चरायै नमः का जाप करें

तुला

इस सप्ताह के पहले दो दिनों में तुला राशि के जातक अपने किसी साहित्य, फिल्म के क्षेत्रों में प्रदर्शन के लिए तैयार रहेंगे। आपको लेखन व अनुसंधान के क्षेत्रों में पुरुस्कार प्राप्त होने की स्थिति बनी हुई रहेगी। उच्च शिक्षा के क्षेत्रों में निश्चित तौर पर प्रगति के योग रहेंगे। घर परिवार में सहयोग व सामंजस्य की स्थिति रहेगी।

कारोबार व्यापार में लाभ की संभावना है। हर्ष होगा। **स्वास्थ्य** सेहत पर विशेष ध्यान दें। सुपाच्य भोजन करें।

शिक्षा अध्ययन में सुधार होगा। विदेश में पढ़ाई का योग। **प्रेम** विवाह का प्रस्ताव आ सकता है। मन खुश रहेगा।

उपाय शिव-पार्वती जी की पूजा-अर्चना करें।

धनु

इस सप्ताह के पहले दो दिनों में धनु राशि के जातक अपने घर गृहस्थी को चमकाने में दिलचस्प रहेंगे। घर के उपयोगी वस्तुओं को जुटाने में पूरा ध्यान रहेगा। जिससे उनकी खरीद को मूर्त रूप देने में सक्षम रहेंगे। इस दौरान पत्नी व बच्चों के साथ किसी स्थानीय बाजार में जाने को तैयार रहेंगे।

कारोबार निवेश सोच समझकर ही करें, नुकसान संभव। **स्वास्थ्य** पुरानी बीमारी ठीक होगी। माता का ध्यान रखें।

शिक्षा पढ़ाई में पूरी तरह से मन लगाएं, सफल होंगे। **प्रेम** जीवन साथी से नम्र व्यवहार रखें। सहयोग मिलेगा।

उपाय ऊं दुं दुर्गाय नमः का जाप करें

कुंभ

इस सप्ताह के शुरूआती दो दिनों में कुम्भ राशि के जातक अपनी आय को बढ़ाने के लिए संघर्षशील बने हुए रहेंगे। आप देखेंगे कि आपके कई प्रयास धीरे-धीरे सफल होते रहेंगे। जिससे आपके हौसले बुलंद रहेंगे। अध्ययन के क्षेत्रों में सामान्य स्थिति रहेगी। इस दौरान आपका ध्यान पढ़ने लिखने में लगा हुआ रहेगा।

कारोबार निवेश में लाभ होगा। सट्टा में जोखिम है। **स्वास्थ्य** वाहन से चोट आ सकती है। सेहत का ध्यान रखें।

शिक्षा नौकरी का प्रयास करें। सफलता कदम चूमेगी। **प्रेम** प्रेम-संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। खुशी मिलेगी।

उपाय सुहागन महिलाओं को श्रृंगार दान करें

वृषभ

इस सप्ताह के पहले दो दिनों में वृष राशि के जातक किसी भूमि को खरीदने के लिए उसके कागजातों की सही स्थिति का पता लगाने के लिए जाएंगे। जिससे संभावित भूलों से बचने में अच्छी सहायता की स्थिति रहेगी। धन निवेश व विदेश के कामों में आपको अच्छी प्रगति की स्थिति रहेगी। आप प्रसन्न रहेंगे।

कारोबार निवेश सोच-समझकर ही करें। सलाह ले लें। **स्वास्थ्य** सर्दी जुकाम व बुखार से सावधान रहें। योग बना है।

शिक्षा रिजल्ट अच्छा आएगा। परिणाम अच्छे आएंगे। **प्रेम** गुप्त शत्रु सक्रिय रहेंगे। बनी बात बिगड़ेगी।

उपाय रामरक्षा सत्रोत का पाठ करें

कर्क

इस सप्ताह के पहले दो दिनों में कर्क राशि के जातक स्वजनों के साथ घुले मिले हुए रहेंगे। इस दौरान आप किसी रिश्तेदार से मिलने के लिए तैयार रहेंगे। उन्हें इस बात का एहसास कराने में भी नहीं चूकेंगे। कि आप उनके साथ हरदम खड़े हुए रहेंगे। धन निवेश व विदेश के कामों में आपको अच्छी प्रगति की स्थिति रहेगी।

कारोबार शेयर-धातु में घाटा हो सकता है। सावधान रहें। **स्वास्थ्य** पेट दर्द, बुखार हो सकता है। विशेष ध्यान रखें।

शिक्षा कैरियर की ओर झुकाव रहेगा। सफलता मिलेगी। **प्रेम** पत्नी का सहयोग करें। लाभ मिलेगा।

उपाय भैरव चालीसा का पाठ हर रविवार करें

कन्या

इस सप्ताह के पहले दो दिनों में कन्या राशि के जातकों को कैरियर में कोई आशा से बड़ी सफलता रहेगी। जिससे आप प्रसन्न रहेंगे। आप देखेंगे कि आपके कई प्रयास धीरे-धीरे सफल होते जा रहे हैं। जिससे आपको खुशी रहेगी। संगीत के प्रयास, आपको बढ़िया सफलता रहेगी। आपकी सेहत सुखद बनी हुई रहेगी।

कारोबार शेयर-सट्टा संभल कर खेलें हानि संभव। **स्वास्थ्य** चोट-मोच आ सकती है। सेहत का ध्यान रखें।

शिक्षा विदेश में अध्ययन का योग बनेगा। सफल होंगे। **प्रेम** मनचाही भेंट हो सकती है। जल्दबाजी न करें।

उपाय ऊँ नमः शिवाय की 11 माला करें

वृश्चिक

इस सप्ताह के पहले दो दिनों में वृश्चिक राशि के जातक अपने आजीविका के क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए संघर्ष करते हुए रहेंगे। हलांकि आप इससे संतुष्ट नहीं रहेंगे। आप कुछ और बेहतर करने के लिए तैयार रहेंगे। आपको इस दिशा में कई बड़ी चुनौतियों से गुजरना पड़ेगा। धन व्यय करने की जरूरत रहेगी।

कारोबार व्यापार में सफलता मिलेगी। बाजार मंदा रहेगा। **स्वास्थ्य** सर्दी जुकाम हो सकता है। सुपाच्य भोजन करें।

शिक्षा प्रतियोगी परीक्षा में बेहतर सफलता मिलेगी। **प्रेम** लिवइन में सावधानी रखें। परेशानी होगी।

उपाय गाय को हरा चारा बुधवार को खिलाएं

मकर

इस दौरान किसी अवार्ड से नवाजे जाने की स्थिति बनी हुई रहेगी। आप अपने रचनात्मक शक्ति का पूरा परिचय देने में व्यस्त रहेंगे। इस सप्ताह के आगे के शेष तीन दिनों में आपको किसी भवन का लाभ रहेगा। सेहत के लिए यह समय अनुकूल बना रहेगा। आप काम के साथ हल्के किस्म के व्यायाम करें।

कारोबार नए आर्डर मिल सकते हैं। धंधा ठीक रहेगा। **स्वास्थ्य** डॉक्टर से परामर्श लेते रहें। बीमारी बढ़ेगी।

शिक्षा पढ़ाई में विशेष रुचि रहेगी। सफलता मिलेगी। **प्रेम** प्रेम-प्रसंग से खुशी होगी। सहयोग मिलेगा।

उपाय पीपल की सात परिक्रमा हर शनिवार करें

मीन

इस सप्ताह के पहले दो दिनों में मीन राशि के जातक अपने सेहत को और मजबूत करने में लगे हुए रहेंगे। आप देखेंगे की आपके प्रयासों का बढ़िया असर हो रहा है। परिणामतर आप तंदुरूस्त रहेंगे। आप अपनी उत्पादों की खपत के लिए किसी स्थानीय बाजार के सर्वेक्षण में लगे हुए रहेंगे। यात्रा से लाभ होगा।

कारोबार जोखिम से सावधान रहें। शेयर में घाटा संभव। **स्वास्थ्य** बुजुर्ग की सेहत का आप विशेष ध्यान रखें।

शिक्षा कैरियर में बेहतर सफलता मिलने की उम्मीद। **प्रेम** पुराने मित्र से भेंट होगी। गुप्त बातें न बताएं।

उपाय शाम को 7 बजे तुलसी पर दीपक लगाएं

व्रत-पर्व

- 18 अक्टूबर :अ.आश्वि.कृ.9
- 19 अक्टूबर :अ.आश्वि.कृ10
- 20 अक्टूबर :कमला एका.
- 21 अक्टूबर : प्रदोष व्रत
- 22 अक्टूबर :शिव. चतु. व्रत
- 23 अक्टूबर:अधिमास समा.
- 24 अक्टूबर : नवरात्रि प्रारंभ

ग्रह स्थिति

- सूर्य : तुला राशि में
- मंगल : मीन राशि में
- बुध : तुला में वक्री
- गुरु : धनु राशि में
- शुक्र : सिंह राशि में
- शनि : मकर राशि में
- राहू : वृष राशि में
- केतु : वृश्चिक राशि में

भविष्यवाणी

मौसम : सर्दियों में डेंगू, चिकुनगुनया, कोरोना, जापानिज बुखार के मरीज बढ़ने से चिंता सताएगी। आम जनता परेशान होगी। सर्दी, खांसी, एलर्जी के मरीज बढ़ेंगे। सावधानी रखें।

व्यापार : शेयर, धातु, खाद्य पदार्थ आदि में भी तेजी- मंदी सप्ताहभर बनी रहेगी। अर्थव्यवस्था में तेजी का रुख आएगा। वाहनों की बिक्री बढ़ेगी। आभूषणों की मिलीजुली रह सकती है।

राजनीति : इस सप्ताह विश्व पटल पर पड़ोसी देश अपना भारत विरोधी प्रचार चरम पर रखेगा। चीन पाकिस्तान हरकत से बाज नहीं आएगा। राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, मप्र, बिहार में राजनीतिक उठापटक चलती रहेगी।

सिद्धकुंजिका स्तोत्र से मिलेगा धन-ऐश्वर्य, सुख व शांति

समस्त बाधाओं को शांत करने, शत्रु दमन, ऋण मुक्ति, करियर, विद्या, शारीरिक और मानसिक सुख प्राप्त करना चाहते हैं तो सिद्धकुंजिकास्तोत्र का पाठ अवश्य करें। भगवान शंकर कहते हैं कि सिद्धकुंजिका स्त्रोत का पाठ करने वाले को देवी कवच, अर्गला, कीलक, रहस्य, सूक्त, ध्यान, न्यास और यहां तक कि अर्चन भी आवश्यक नहीं है। केवल कुंजिका के पाठ मात्र से दुर्गा पाठ का फल प्राप्त हो जाता है। सिद्ध कुंजिका स्तोत्र में दशों महाविद्या, नौ देवियों की आराधना है।

क्यों है सिद्ध ये स्त्रोत : इसके पाठ मात्र से मारण, मोहन, वशीकरण, स्तम्भन और उच्चाटन आदि उद्देश्यों की एक साथ पूर्ति हो जाती है। इसमें स्वर व्यंजन की ध्वनि है। योग और प्राणायाम है। सिद्ध कुंजिका स्त्रोत को अत्यंत सावधानी पूर्वक किया जाना चाहिए

संपूर्ण मंत्र - ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ऊं ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।।

पाठ कैसे करें : सिद्ध कुंजिका स्तोत्र कापाठ

अत्यंत सावधानी पूर्वक किया जाना चाहिए। प्रतिदिन की पूजा में इसको शामिल कर सकते हैं। लेकिन यदि अनुष्ठान के रूप में या किसी इच्छाप्राप्ति के लिए कर रहे हैं तो आपको कुछ सावधानी रखनी होंगी।

1- **संकल्प:** सिद्ध कुंजिका पढ़ने से पहले हाथ में अक्षत, पुष्प और जल लेकर संकल्प करें। मन ही मन देवी मां को अपनी इच्छा कहें। जितने पाठ कर सकें, उसका संकल्प करें। अनुष्ठान के दौरान माला समान रखें। कभी एक कभी दो कभी तीन न रखें। सिद्ध कुंजिका स्तोत्र के अनुष्ठान के दौरान जमीन पर शयन करें। ब्रह्मचर्य का पालन करें। प्रतिदिन अनार का भोग लगाएं। लाल पुष्प देवी भगवती को अर्पित करें।

सिद्धकुंजिका स्तोत्र पाठ का समय

1- रात्रि 9 बजे करें तो अत्युत्तम। 2- रात को 9 से 11.30 बजे तक का समय रखें। लाल आसन पर बैठकर ही पाठ करें। घी का दीपक दायें तरफ और सरसो के तेल का दीपक बाएं तरफ रखें। अर्थात दोनों दीपक जलाएं।

स्त्रोत पाठ : शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कुंजिकास्तोत्रमुत्तमम। येन मन्त्रप्रभावेण चण्डीजापः भवेत।।1।। न कवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम। न सूक्तं नापि ध्यानं च न न्यासो न च वार्चनम।।2।। कुंजिकापाठमात्रेण दुर्गापाठफलं लभेत। अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम।।3।। गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति। मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम। पाठमात्रेण संसिद्ध्येत् कुंजिकास्तोत्रमुत्तमम।।4।।

अथ मंत्र : ऊं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ऊं ग्लौ हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।। इति मंत्रः।।

नमस्ते रुद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि।
नमः कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिन।।1।।
नमस्ते शुम्भहन्त्र्यै च निशुम्भासुरघातिन।।2।।
जाग्रतं हि महादेवि जपं सिद्धं कुरुष्व मे।
ऐंकारी सृष्टिरूपायै ह्रींकारी प्रतिपालिका।।3।।
क्लींकारी कामरूपिण्यै बीजरूपे नमोऽस्तु ते।
चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी।।4।।
विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मंत्ररूपिण।।5।।
धां धीं धू धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देविशां शीं शूं मे शुभं कुरु।।6।।
हुं हु हुंकाररूपिण्यै जं जं जं जम्भनादिनी। भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः।।7।।
अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तं कुरु कुरु स्वाहा।। पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा।। 8।। सां सीं सूं सप्तशती देव्या मंत्रसिद्धिंकुरुष्व मे।। इदंतु कुंजिकास्तोत्रं मंत्रजागर्तिहेतवे। अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति।। यस्तु कुंजिकया देविहीनां सप्तशतीं पठेत। न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा।।

ऐसी हथेली को मिलता है धनलाभ

हस्तरेखा टिप्स

संसार ऐसे बहुत से लोग हैं जिनके पास समस्त सुविधाएं हैं। उनके पास किसी भी चीज की कोई कमी नहीं है। ऐसे लोगों पर लक्ष्मी की कृपा हमेशा बनी रहती है। घर में धन-धान्य में निरंतर बढ़ोतरी होती रहती है। हस्तरेखा विज्ञान के अनुसार ऐसे लोगों के हाथों में विशेष स्थितियां रहती हैं। यदि किसी व्यक्ति के हाथ में हथेली का बीच का हिस्सा दबा हुआ और गहरा होने के साथ ही सूर्य एवं गुरु पर्वत पुष्ट, मजबूत एवं उभरे हुए हों तो ऐसे व्यक्ति व्यक्तित्व के बहुत ही धनी होती हैं। उनका व्यक्तित्व बिल्कुल अलग होता है। यदि भाग्य रेखा शनि पर्वत के मूल को छूती हो तो यह स्थिति हाथ में शुभकर्तरी योग बनाती है। जिन लोगों के हाथों में ऐसा योग होता है वे तेजस्वी और आकर्षक व्यक्तित्व के धनी होते हैं। लोग उनके प्रभाव में शीघ्र आ जाते हैं। ऐसे लोगों का व्यक्तित्व जादुई होता है। इस तरह के लोगों के आसपास समस्त सुविधाएं होती हैं। उन पर

लक्ष्मी की कृपा बरसती रहती है। ऐसे लोगों के पास कमाई के स्रोत भी एक से अधिक होते हैं। ऐसे लोगों को अपने पूर्वजों से जो भी संपत्ति या धन मिलता है वे उसमें निरंतर बढ़ोतरी करते रहते हैं। शारीरिक रूप से भी ऐसे लोगों का व्यक्तित्व आकर्षक होता है। विपरीत लिंगी की ऐसे लोगों के जीवन में लंबी लाइन रहती है। हालांकि कभी-कभी ऐसे लोग व्यक्ति घमंडी भी हो जाते हैं जो इनके व्यक्तित्व का नकारात्मक पक्ष होता है।

कविता
-जावेद अख्तर-

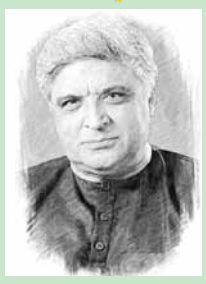

जावेद अख्तर का नाम देश का बहुत ही जाना-पहचाना नाम हैं। जावेद अख्तर शायर, फिल्मों के गीतकार और पटकथा लेखक तो हैं ही, सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में भी एक प्रसिद्ध हस्ती हैं। इनका जन्म 17 जनवरी 1945 को ग्वालियर में हुआ था। पिता जान निसार अख्तर प्रसिद्ध प्रगतिशील कवि और माता सफिया अख्तर मशहूर उर्दु लेखिका तथा शिक्षिका थीं। जावेद का बचपन विस्थापितों सा बीता। छोटी उम्र में ही माँ का आंचल सर से उठ गया और लखनऊ में कुछ समय अपने नाना नानी के घर बिताने के बाद उन्हें अलीगढ़ अपने खाला के घर भेज दिया गया जहाँ के स्कूल में उनकी शुरूआती पढाई हुई। वालिद ने दूसरी शादी कर ली और कुछ दिन भोपाल में अपनी सौतेली माँ के घर रहने के बाद भोपाल शहर में उनका जीवन दोस्तों के भरोसे हो गया। यहीं कॉलेज की पढाई पूरी की, और जिन्दगी के नए सबक भी सीखे।

दर्द अपनाता है पराए कौन

बहाना ढूँढते रहते हैं कोई रोने का
हमें ये शौक़ है क्या आस्तीं भिगोने का

अगर पलक पे है मोती तो ये नहीं काफी
हुनर भी चाहिए अल्फ़ाज़ में पिरोने का

जो फ़स्ल ख़्वाब की तैयार है तो ये जानो
कि वक्त आ गया फिर दर्द कोई बोने का

ये जिन्दगी भी अजब कारोबार है कि मुझे
ख़ुशी है पाने की कोई न रंज खोने का

है पाश-पाश मगर फिर भी मुस्कुराता है
वो चेहरा जैसे हो टूटे हुए खिलौने का।

शीत के बाद बसंत

कहानी
-स्कंद शुक्ल-

जाड़े की शामें हमेशा से ही उसे मनहूस लगती रही हैं। गर्मियों की तरह सूरज धीरे-धीरे नहीं उतरता, कि लोग धीमे धीमे ठंडी होती सांझ का आनन्द उठा सकें। वह तो दिखते दिखते धुप्प से अचानक ही ढुक जाता है, और तुरंत ही, हो आये अँधेरे के साथ, ठंडी, अन्दर तक बेध देने वाली गलन उस मुलायम सी गरमी को न जाने कहाँ भगा देती है। तब, 'लव सॉग ऑफ प्रफ्रोक' में एलीट की वह चौंका देने वाली पंक्ति कितनी सटीक लगती है 'व्हेन द इवनिंग इज स्प्रेड आउट अगेंस्ट द स्काई/ लाइक अ पेशेंट ईथरायिज्ड ऑन द टेबल'। अब तो बसंत के आगमन के साथ ही ये शामें खुशनुमा होंगी कुछ।

निम्मी पार्क में बैठी रोमी का इंतजार कर रही थी। थोड़ी देर में धुंधलका छाने वाला था। बस कुछ ही देर में खेल रहे बच्चे अपने अपने घरों को चले जायेंगे। कुछ कुछ अपार्टमेंट्स से उन्हें अन्दर आने की आवाजें आने भी लगी थीं- 'अब अन्दर आओ, होमवर्क करना है',

'ठण्ड बढ़ रही है, जल्दी आओ'... । पार्क में स्थित उस बढ़े से पेड़ पर चिड़ियों की फौज वापस लौट रही थी और चिड़ियों और उनके चूजों के मिलन का शोर बढ़ता ही जा रहा था।

टाइम कटे भी तो कैसे? पड़ने की हॉबी तो है, लेकिन कितना पड़े? और जिसे पड़ने की लत हो, वह टी.वी. को नहीं झेल सकता? सोशलाइजेशन तो कितने वर्ष हुए समाप्त ही हो गया। आखिर जिसके घर जाओ वह अपने बच्चों में व्यस्त। और फिर मिलने जुलने वालों की बातों और आँखों में हमेशा वही सवाल। कभी स्वाभाविक जिज्ञासा के रूप में और कभी संवेदना स्वरुप। नौकरी भी छोड़नी पड़ गयी। आखिर महीनों महीनों की छुट्टियां देता कौन जो माँ बनने के प्रयास में उसे आवश्यक होती थीं। आई.वी.एफ., मोलर प्रेगनेंसी, मिसकैरिज... जैसे शब्द तो पढ़ाई लिखाई के दौरान सुने-पड़े थे। क्या पता था कि उनसे इस तरह रूबरू होना होगा किसी दिन। तभी उसे पैरों के पास कुछ गुदगुदी से लगी, जैसे किसी ने छुआ हो। तन्द्रा टूटी और उसने अचकचाकर बेंच के नीचे झांका।

'ओह! तो यह तुम हो!' भय मुस्कान में बदल गया। वह एक प्यारा सा पिल्ला था। गोल मटोल सा ढनंगते उसके पैरों से चिपट रहा था। तभी उसकी माँ आ गयी, हौले से दांतों से उसे पकड़ा और सुरक्षित स्थान पर ले जाने लगी।

वह फिर से बैठ गयी। खाना बनाने का कितना शौक था उसे। वह भी, नए नए व्यंजन इजाद करने का। और, रोमी हो या उसके सास-श्वसुर, सभी खाने के शौकीन। लेकिन अब? अच्छा नहीं लगता जब पड़ोस की हम-उम्र महिलाओं को कहते सुनती है 'अब इन बच्चों को कौन सा व्यंजन बना कर दें? टिफिन खत्म ही नहीं करते ये कभी'। 'काश, ईश्वर ने अवसर तो दिया होता मुझे'!

उन संत्रास भरे प्रयासों के दौरान कितनी ही बार तो ख्याल आया कि किसी बच्चे को ही गोद ले लें। कुछ करीबी शुभेच्छुओं ने यह भी कहा कि गोद लेना बढ़ा शुभ होता है। अक्सर ऐसा करने पर कंसेप्शन भी सफल हो जाता है। लेकिन यह निर्णय इतना आसान तो होता नहीं न। परम्पराओं, संस्कारों में बंधे हम, कैसे स्वीकार लें किसी को? कितने तो प्रश्न उमड़ते थे जब भी इस पर रोमी से बात हुयी। किसका होगा वो? क्या बढ़ा होने पर अपना मानेगा हमें? आखिर अभी हमारी उम्र ही क्या है? अभी तो कुछ एक वर्ष और हैं कि अपने के लिए प्रयास कर लें। गोद तो कभी भी ले लेंगे।

यह भी सोचा कि किसी रिश्तेदार से ही उसका बच्चा गोद ले लें। इस से कुल आदि के प्रश्न और संशय से मुक्ति तो रहेगी। लेकिन फिर दूसरी बाधाएं। किस से कहो। कैसे प्रस्ताव रखो। पुराने? माने की तरह अब कई कई बच्चे तो होते नहीं परिवारों में, कि किसी एक को दुसरे को दे दे। न्यूक्लिअर फैमिली के समय में वैसे भी सब नियोजित ही होता है। बस, इसी सब में बारह वर्ष गुजर गये। अब तो आदत पड़ गयी है। अब अवसाद है भी तो महसूस नहीं होता।

रोमी आ ही रहे होंगे। निम्मी ने उठने का उपक्रम किया ही था कि अचानक पीछे से आवाड आयी 'अरे हम लोग को देख कर चल दी क्या?' और फिर एक मधुर सी हँसी। उसने पीछे देखा तो उसके टावर के ग्राउंड फ्लोर पर एक अपार्टमेंट में रहने वाले बुजुर्ग दम्पत्ति चोपड़ा अंकल और आंटी थे।

'अरे नहीं आंटी', कहते हुए उसने लपक के दोनों के पैर छुए। चोपड़ा अंकल व्हील चेयर पर थे और उनकी पत्नी उन्हें पार्क की सैर कराने ले आयी थीं। उसने उनके हाथ से व्हील चेयर की हैंडल ले ली और उस छोटे से आर्टिफीसियल पॉन्ड के पास उनके पसंदीदा स्थान की ओर चली।

चोपड़ा जी पिचहत्तर के कुछ ऊपर के थे और उनकी पत्नी उनसे दो-तीन वर्ष कम। सरकारी अधिकारी रहे थे और कई उच्च पदों पर कार्य करते हुए पंद्रह वर्ष पूर्व सेवानिवृत्त होकर इसी शहर में बस गये थे। अधिकांश सेवा काल उनका इसी महानगर में बीता था। दोनों संताने भी यहीं हुयी थीं और स्कूली शिक्षा ग्रहण की थीं। भाग्यवान व्यक्ति थे।

दोनों ही बच्चे उच्च पदस्थ। एक तो अमरीका में किसी बैंक में कार्यरत था। उसने अमरीकी नागरिकता भी ले ली थी। और दूसरा, भारतीय वन सेवा का अधिकारी था जो नार्थ-ईस्ट के किसी काडर में तैनात था। दोनों के ही दो दो बच्चे थे। सुन्दर और गुणवान। ऐसा सुना था। क्योंकि किसी को याद नहीं कि इन हाल के वर्षों में उनमें से कोई अपने बाबा-दादी के पास मिलने आये हों। नौकरी की शुरुआत में तो बेटे बहू साल में एक-आध बार आ जाते थे। होली पर कोई और, दीपावली पर कोई। लेकिन समय के साथ, नौकरी की व्यस्तताएं और बच्चों की पढाई उन भेंटों को कम करती गयीं। अब तो स्काइप और फेसबुक के माध्यम से ही उनमें उत्तरोत्तर वृद्धि का पता चलता था। 'बस-बस, यहीं रोक दो निम्मी', अंकल ने कहा।

चोपड़ा आंटी और निम्मी उनके बगल में बैठने के लिए रखे रॉक्स पर बैठ गये।

'शीत ने इन पौधों की पत्तियाँ ही समाप्त कर दी हैं। ठण्ड कम हो तो यह वापस हरी हों', निम्मी ने पॉन्ड के पास के लगे फूलों के पौधों की ओर देखते हुए कहा।

'आप लोग यहाँ की यह भीषण जाड़ा क्यों झेलते है? इतनी बढ़िया जगहों पर आपके बेटे हैं, वहाँ कभी नहीं जाते आप लोग?', उसके मुँह से बरबस ही निकल गया।

'हाँ, सुना तो हम दोनों ने भी है कि वे दोनों ही बढ़े बढ़े खूबसूरत बंगलों में रहते हैं। काम करने वालों और सुविधाओं की कोई कमी नहीं है', चोपड़ा अंकल ने बोला। 'लेकिन मनुष्य को सबसे अधिक आवश्यकता होती है समाज की, कोई बोलने-बतलाने वाला, कोई जिस से वह शेयर कर सके अपने अंतर्मन को। और वह इसकी जीवन यात्रा में कोई भी हो सकता है। उसके लिए विधिक और सामाजिक रूप से परिभाषित संबंधों की परिधि ही आवश्यक नहीं। वह सब यहीं है। आखिर जीवन का अधिकांश समय यहीं बिताया है हम दोनों ने, तो संबंध भी तो यहीं हैं'।

तभी आंटी ने बोला, 'अरे निम्मी, व्हाट्सएप्प पर मेरी नयी डीपी नहीं देखी तुमने?'

'हाँ आंटी, दोपहर में नजर पड़ी। पूछने ही वाली थी। फिर दादी बनी हैं क्या आप! बढ़ी प्यारी से बिटिया की फोटो लगी है उस पर'।

'नहीं जी। तुम तो जानती हो न कि कॉलोनी के पास उस अनाथालय में हम लोग जाते रहते हैं अक्सर। बस वहीं पर थी यह। अनाथालय की सिस्टर ने बताया कि गेट के पास कोई एक कम्बल में लिटा हुआ छोड़ गया था। सचमुच बहुत प्यारी है वो। कल ही तुम्हारे अंकल का जन्मदिन भी है न। वहीं मनाएंगे। और इसके लिए तो आज दोपहर इन्होंने खूब सारे सामान विशेष रूप से लिए, जैसे अपने ही घर कोई आया हो'

'अरे भाई, अपने घर में ही कोई आया हो, यह सब मानने की ही तो बात है। मन ने मान लिया कि अपना है तो बस हो गया', अंकल ने ठठाकर कर हँसते हुए उत्तर दिया। निम्मी को अन्दर कुछ हो रहा था। जैसे वह अचानक किसी निर्णय पर पंहुचने चाहती हो। तुरंत। अचानक उसने अपना फोन अपने हैण्ड-वॉलेट से निकाला और रोमी को मिला दिया।

'जल्दी आओ थोड़ा।'

'कुछ विशेष?,' उधर से आवाज आयी।

'हाँ। विशेष। एक छोटी सी बिटिया के लिए शॉपिंग करनी है, खूब सारी। आखिर कितनी भी विकट ठण्ड पड़े, बसंत तो आयेगा ही न।'

चोपड़ा दंपत्ति उसके मुख पर पसर आयी उस अभूतपूर्व शांतिमय-कान्ति को स्पष्ट देख रहे थे।